रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों में वैश्वीकरण : एक अध्ययन

अध्याय 1 उपन्यास की पृष्ठभूमि एवं हिन्दी उपन्यास में वैश्वीकरण पृ.सं.

1.1 उपन्यास का अर्थ एवं स्वरूप 16

1.2 उपन्यास के तत्व और प्रकार 20

1.3 प्रासंगिक काल में उपन्यास की आवश्यकता एवं महत्ता 31

1.4 वैश्वीकरण और हिन्दी उपन्यास 32

1.5 निष्कर्ष 34

अध्याय 2 रमेशचन्द्र शाह : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

2.1 रमेशचन्द्र शाह का व्यक्तित्व 37

2.2 सृजन–रेखा 46

2.3 कृतित्व 62

2.4 सामाजिक मूल्यांकनः पुरस्कार एवं सम्मान 76

2.5 समकालिन हिन्दी साहित्य में रमेशचन्द्र शाह का योगदान 77

2.6 निष्कर्ष 81

अध्याय 3 वैश्वीकरण का अर्थ एवं स्वरूप

3.1 वैश्वीकरण का परिचय और इतिहास 85

3.2 भारत और वैश्वीकरण 89

3.3 वैश्वीकरण के विभिन्न आयाम और सोपान 110

3.4 भूमंडलीकरण के विकास का क्रमिक चरण 116

3.5 वैश्वीकरण की विशेषताएँ 124

3.6 निष्कर्ष 126

अध्याय 4 रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों में सांस्कृतिक एवं सामाजिक पक्ष

4.1 संस्कृति का सामान्य परिचय और भारतीय संस्कृति 129

4.2 संस्कृति शब्द और संस्कृति एवं सभ्यता 132

4.3 एकता के तत्व 137

4.4 संस्कृति और धर्म 144

4.5 "गोबरगणेश" उपन्यास में सांस्कृतिक और सामाजिक चित्रण 146

4.6 "विनायक" उपन्यास में सांस्कृतिक और सामाजिक चित्रण 149

4.7 "किस्सा गुलाम" उपन्यास में सांस्कृतिक और सामाजिक चित्रण 157

4.8 "आखिरी दिन" उपन्यास में सांस्कृतिक और सामाजिक चित्रण 163

4.9 "सफेद परदे पर" उपन्यास में सांस्कृतिक और सामाजिक चित्रण 169

4.10 "पूनर्वास" उपन्यास में सांस्कृतिक और सामाजिक चित्रण 177

4.11 निष्कर्ष 183

अध्याय 5 रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों में धार्मिक एवं ऐतिहासिक वर्णन

5.1 धर्म का परिचय 186

5.2 धर्म और राजनीति व धर्म और सत्य 190

5.3 भारत और विश्व धर्म की तुलना 193

5.4 "आखिरी दिन" उपन्यास में धर्म 201

5.5 'विनायक' उपन्यास में धर्म, राजनीति, और ऐतिहासिक वर्णन 202

5.6 'कथा सनातन' उपन्यास में राजनीति, धर्म और ऐतिहासिक चित्रण 209

5.7 'आप कहीं नहीं रहते विभूति बाबू' उपन्यास में धर्म और ऐतिहासिक वर्णन 218

5.8 'कम्बखत इस मोड़ पर' उपन्यास में ऐतिहासिक चित्रण 225

5.9 निष्कर्ष 232

अध्याय 6 उपसंहार 235